PEN2PRINT®
Edupedia Publications Pvt Ltd

साहित्य संहिता

Available at http://www.sahityasamhita.org/

ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 10
November 2015

डॉ. सूर्यबाला की कहानियों का वैशिष्ट्य

नीरजा सिंह

समकालीन कथाकारा व व्यंग्य लेखिका डॉ सूर्यबाला जी साहित्य के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान और अस्मिता रखती है। इनके अब तक- एक इंद्रधनुष जुबैदा के नाम , दिशाहीन 'थाली भर चाँद' ' मुंडेर पर' , 'गृह प्रवेश', 'साँझबाती' 'कात्यायिनी संवाद' , 'इक्कीस कहानियां' , 'पांच लम्बी कहानियां' , 'एक टुकड़ा कस्तूरी' इत्यादि कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं | उनका कथा संसार इतना व्यापक है, उसकी इतनी दशाएं और दिशाएं है, पात्रों को लेकर इतनी विविधता है कि जीवन का शायद ही कोई क्षेत्र उनसे अछूता रह पाया है | उनकी संवेदना बच्चो, किशोरों, छात्रों, मजदूरों, स्त्रियों के साथ-साथ पुरुषो, वृद्धजनों व पशु-जगत तक भी व्याप्त है |

सूर्यबाला जी की 'बाऊजी और बन्दर' कहानी आज के परिवारों के स्नेह रहित वातावरण को दर्शाती है | साथ-ही-साथ उस उपयोगितावादी सोच पर भी कटाक्ष करती है, जहाँ सभी रिश्ते-नाते, पारस्परिक व्यवहार उपयोगिता की कसौटी पर कसे जाने लगे है | कहानी में बाऊजी की भूमिका महज बन्दर भगाने वाले की रह जाती है, क्योकि परिवार कि दृष्टि में बूढ़े हो जाने के कारण वो किसी और काम के नहीं रह गए है और जब वो इस काम में असफल हो जाते है तो संवेदना कुछ इस प्रकार तार-तार होकर बिखर जाती है -

"इतना डरते हैं तो जाएं वापस गांव और उड़ाएं जाकर खेतों में चील- कव्वे , हमारे किस काम के|"[1]

ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 10
November 2015

'संताप' कहानी भारतीय समाज की उस रूढ़ि पर व्यंग्य करती है जिसमे पति चाहे कैसा भी हो उसे परमेश्वर माने जाने का समर्थन किया गया है | फिर चाहे वो अपने पति - धर्म का उचित निर्वाह करे या न करे | कहानी की मूल में एक माँ का अपने पुत्र और पुत्री के प्रति अटूट, अगाध प्रेम को बेहद मार्मिकता के साथ विश्लेषित किया गया है | लेखिका एक भारतीय स्त्री और माँ के अंकन में पूरी तरह सफल रही है जो एक तरफ अपने पति की डूबते हुए बच्चो को बचाने की कोशिश न करने से व्यथित है और दूसरी तरफ वह उसके झूठे गुरूर को ,पुरुषत्व के दम्भ को चुनौती देती हुई सोचती है कि-

"अच्छा, यह छूट आज तक दुनिया किसी पत्नी को क्यों नहीं मिली कि वह अपने पति कि इस किस्म कि नामर्दगी को उजागर कर सके ?"[3]

'रहमदिल' कहानी वर्तमान समाज की मौक़ापरस्तता पर व्यंग्य करती है | कानून व्यवस्था और कानून के रखवाले ही उसका मखौल उड़ाकर गरीब व अशिक्षित जनता को लूट रहे है, यह कहानी इसका वास्तविक दस्तावेज है | यह कहानी व्यवस्था में घुन कि तरह लग चुके भ्रष्टाचार को केंद्र में रख कर लिखी गयी है | 'रहमत' जिस तरह पुलिस द्वारा पूरी तरह लूटा जाता है, और इस लूट से बेखबर रहते हुए जब ईश्वर के प्रति धन्यवाद व्यक्त करता है तो पाठक का मन भी भ्रष्ट आचरण के प्रति विद्रोह करने लगता है -

"अल्लाताला की बड़ी मेहरबानी........ कि बेदाग बच आया........नहीं तो फँसा बड़ी बुरी तरह था कानून के सिकंजे में........वो तो पुलिसवाला रहमदिल निकला, जो छुड़वा दिया बेचारे ने--अल्लाह भला करे उसका ; नहीं तो उधड़ी सीवनवाला तो बिलावजह गुमराह कर गिया था |"[3]

ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 10
November 2015

'समान सतहें' कहानी आर्थिक कठिनाइयों से जूझते मध्यवर्गीय परिवार के संत्रास को बताती है | आर्थिक तंगी किस तरह व्यक्ति को अपने शिकंजे में जकड़ कर उसे मजबूर और असहाय बना देती है, यह इस कहानी का मूलभाव है | मध्यवर्गीय परिवार जो एक तरफ तो रोटी-कपड़े की मूलभूत समस्या से ही ग्रस्त है, लेकिन फिर भी अतिथि धर्म में किसी तरह से पीछे न हटते हुए उसका समुचित निर्वाह करते है, यही भाव इस कहानी की रीढ़ है | अभाव का यह चित्रण पाठक को मार्मिक वेदना से भर देता है जब वापस लौटते हुए अतिथि को बच्चे की गुल्लक तोड़ कर वापसी का नेग दिए जाने की रीति का निर्वाह किया जाता है |

'तोहफा' कहानी मध्यवर्गीय परिवारों में चलने वाले आपसी द्वद्व, आर्थिक समस्याओ से उत्पन्न कड़वाहट व करियर - प्रमोशन को लेकर चलने वाली दौड़ पर व्यंग्य के रूप में लिखी गयी है | बबलू के पिता अपनी झूठी व दिखावटी शान और बॉस की चमचागिरी के लिए जन्म दिन के अवसर पर बेटे को नजरअंदाज कर करियर की सीढियाँ गिनने में ही व्यस्त रहता है | और गुस्से में आकर बबलू को चांटा उपहार के रूप में देता है | कहानी में लेखिका ने बबलू के माध्यम से बालको की जिज्ञासा, विनोदप्रियता, जिद्द, गुस्से का मनोवैज्ञानिक अंकन किया है|

'निर्वासित' कहानी एक और वृद्ध जीवन के अकेलेपन के संत्रास और रीतते मानवीय संबंधों को व्यक्त करती है, वही नई युवा पीढ़ी की उस सोच का पर्दाफाश करती है जो अपनी स्वतंत्रता और स्वच्छंदता के साथ किसी प्रकार का समझौता नहीं करना चाहती हैं | जो ऐशो-आराम व दिखावे कि जिंदगी में ही पूरी तरह मगन हैं | दूसरी तरफ इस युवा पीढ़ी से जुड़ा वृद्ध समाज है, जिसे 'जनरेशन गैप' की संज्ञा देकर त्याज्य बना दिया गया हैं | कहानी में बताया

ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 10
November 2015

गया हैं की माँ ही सारी पारिवारिक व्यवस्था का आधार होती हैं और वही परिवार के सभी सदस्यों को एक सूत्र में बंधे रखने की भरसक कोशिश करती हैं |

'थाली भर चाँद' कहानी में लेखिका मध्यवर्गीय समाज को सादगी व विश्वसनीयता के साथ अंकित करती है | यह कहानी वास्तविक श्रम और कथित सोशल वर्क के बीच के वास्तविक भेद को स्पष्ट कर देती है | यह कहानी 'डिगनिटी ऑफ लेबर' की महत्ता को बताती है, जिसे आज हम छद्म रूप में ग्रहण कर रहे हैं | इस कहानी के लिये लेखिका स्वयं कहती हैं कि -

"सहजता में इतना सौंदर्य, इतना शिवत्व समा सकता हैं, यह मैंने उस दोपहर को जाना |"[4]

'सुमिंतरा की बेटियाँ' कहानी में बालको के मन का चित्रण हुआ हैं| पारिवारिक दुश्वारियां किस कदर उनके कोमल मन को प्रभावित करती हैं, यह इस कहानी में बहुत ही संवेदनशील बन पड़ा हैं | इसके साथ ही एकल स्त्री के जीवन में आने वाली कठिनाइयों को दर्शाना भी लेखिका का लक्ष्य रहा हैं | भारतीय समाज में स्त्री आज भी कितनी विवश व लाचार हैं, इस तथ्य पर कहानी के द्वारा प्रहार किया गया हैं |

'आखिरी विदा' कहानी विदेश में रह रहे व कई सालो बाद अपने वतन लौट कर आने वाले इकलौते पुत्र के प्रति माता-पिता के अटूट प्रेम का मार्मिक दस्तावेज हैं | वृद्ध समाज के अकेलेपन और अपनत्व से भरी यह कहानी उनके इस निःस्वार्थ प्रेम को बताता हैं, जो संतानों की तरक्की से खुश तो हैं परन्तु कभी कभी उस ख़ुशी के बदले मिला एकाकी जीवन उनके अंतर में एक टूट और उदासी भर देता हैं | वापस विदेश लौट कर जाने वाले पुत्र के प्रति प्रेम की व्यथा कुछ इन शब्दों में बयां होती हैं -

ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 10
November 2015

"पिता ने सोचा , यह तो होना ही था| बेटा जाता हैं सुबह , फिर न जाने कितने सालों के लिए , आँसू तो आएंगे ही|"[5]

'सुनंदा छोकरी की डायरी' कहानी निम्न वर्ग की आर्थिक-पारिवारिक कठिनाईयों के साथ 'बाल मजदूरी' जैसी ज्वलंत समस्या को उठाती हैं| निम्न वर्ग के बच्चे किस प्रकार मजदूरी के चक्र में पड़ कर शिक्षा के अधिकार से वंचित रह जीवन भर उसका दंश भोगते हे, कहानी उस यथार्थ को चरितार्थ करती हैं | एक बच्ची के मन में अपनी पढ़ाई जारी न रख पाने की जो कचोट हैं , बेवजह सजा पाने की जो वेदना हैं, वह कहानी में पूरे समाज व सामाजिक व्यवस्था पर व्यंग्य के साथ पाठक को झकझोर कर रख देती हैं, जब सुनंदा कहानी के अंत में अपना परिचय झाड़ू लगानेवाली के रूप में कुछ इस तरह देती हैं -

"मैं चुंगीवाला इस्कूल में जाती | मेरी पेलेवाली भानू टीचर मेरे कूँ आज देखी--वो मेरे को पेचानी तो प्यार से पूँछी, "अरे, नंदा? फिर पढ़ने को आयी क्या, शाला में ?"

"मैं बोली, "नईं, झाड़ू देने को, खी........."

"अरे, मरे हँसने को क्या हुआ रे? मैं कितना कोशिश किया पर हँसने को आयाच नहीं |"[6]

'आदमकद' कहानी में, समाज द्वारा औरत की खूबसूरती के जो मायने ढल रखे हैं, उस पर करारा व्यंग्य करती हैं | यह कहानी एक बदसूरत स्त्री के खूबसूरत व्यक्तित्व को लेकर लिखी गयी हैं | व्यक्ति रूप से नहीं गुणों से तौला जाता हैं | मामी के माध्यम से लेखिका ने बताया हैं की औरत चाहे तो सब

ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 10
November 2015

कुछ सहकर भी आगे बढ़ सकती हैं | कहानी पूरे जीवन भर बदसूरती का अभिशाप झेलती एक स्त्री की अथक जिजीविषा, लगन व आशावादिता इस तरह व्यक्त होती हैं -

"किसी की चहेती, लजीली औरत बनकर दिखा पाना मेरे बस में नहीं था ....यह काया सबसे बड़ी बाधा थी मेरे लिए | लेकिन माँ बनकर दिखा पाना तो मेरे हाथ में हैं न |............माँ-बेटे के बीच कभी बदसूरत काया बाधा नहीं बनती | यह बहुत बड़ा फर्क हैं, मर्द और औलाद में ...."[7]

'कंगाल' कहानी विनय के माध्यम से बेरोजगारी के संत्रास को व्यक्त करती हैं | किस तरह रोजगार के बिना व्यक्ति परिवार व समाज का निशाना बनकर रह जाता है, इसका दिग्दर्शन लेखिका ने कराया है | यह कहानी मनोविश्लेषणात्मक शैली में लिखी गयी है | विनय को मनोस्थितियों व उसके रोजगारहीन होने के कारण परिवार में उसके व्यक्तित्व व स्थान के निर्बल होते जाने को यह कहानी बताती है |

'गृहप्रवेश' कहानी सामाजिक अराजकता और वैश्विक आतंकवाद के परिणामों से परिचित कराने वाली कहानी है | विघटन , आतंक, हताशा के दौर में यह कहानी जीने की कोशिश व आशावादी दृष्टि बनाये रखने की प्रेरणा देती है | इसके साथ ही परिवार और संबंधों में गुम होती जा रही भावात्मकता को समेटने की कोशिश भी यह कहानी करती है | शगुन के माध्यम से लेखिका ने परिवेश में फैले भय, गुंडागर्दी व अराजकता के माहौल को उकेरा है, वही दूसरी और बीरु के माध्यम से इस विपरीत माहौल में भी जीवन के प्रति आशावादी बने रहने की प्रेरणा दी है |

ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 10
November 2015

'होगी जय, होगी जय, हे पुरुषोत्तम नवीन' कहानी आदर्शो, मूल्यों, उसूलो पर कायम रहने का सन्देश अरुण वर्मा के माध्यम से देती है| भ्रष्टाचार पर करारा व्यंग्य करती यह कहानी ईमानदार व मूल्यवान व्यक्ति के जीवन में उसूलो पर चलने के कारण आने वाली कठिनाइयों को बताती है| यह वर्तमान प्रशासनिक व्यवस्था की ज्वलंत समस्या है, जहाँ ईमानदारी का सिला उसे ट्रांसफर आर्डर या विभागीय जाँच के रूप में मिलता है | ऐसे परिवेश में अरुण वर्मा एक क्रांतिकारी के रूप में दिखाई पड़ते हैं |

'दूज का टीका' कहानी बदलते परिवेश में परिवारिक मूल्यो के बदलते जाने व उपयोगितावादी सोच को उजागर करती हैं | रिश्तो में भावनाओ का जो स्थान 'गिव एंड टेक' की अवधारणा ने ले लिया हैं, उस पर व्यंग्य के साथ-साथ रतन व कुक्की के माध्यम से भाई-बहिन के निःस्वार्थ प्रेम, परंपरा, संबंधों की नमी को विश्लेषित कर दिया गया हैं | पाठक भाव-विभोर हुए बिना नहीं रह पाता हैं जब कुक्की कहानी के अंत में कहती हैं कि-

"रतन, बड़ी हूँ तुझसे | उस समय 'चौके' पर 'ना' करना तुम्हारे प्यार की बेकद्री होती | एक बहुत खूबसूरत पल की हत्या और अब भी, सिर्फ इसे लौटा रही हूँ, इसके साथ जितना, जो कुछ तुमने दिया, सब सहेज कर बाँधे लिए जा रही हूँ |"[8]

'झील' कहानी श्यामली पर केंद्रित हैं , जो ऊपर से तो सौम्य, शांति व सामंजस्य की मूर्ती दिखती हैं , परन्तु गौर से देखा जाये तो अपने अंदर एक तूफ़ान समेटे हुए हैं | पति की अनदेखी को सहन करती हुई, ताउम्र पारिवारिक जिम्मेदारियों को निभाती हुई श्यामली एक ऐसी स्त्री का प्रतिनिधित्व करती हैं जो बगावत तो कर ही नहीं सकती | अपने प्रति होने वाले अनदेखे, अनजाने व्यवहार

PEN2PRINT®
Edupedia Publications Pvt Ltd

साहित्य संहिता

Available at http://www.sahityasamhita.org/

ISSN 2454-2695

Volume 01 Issue 10

November 2015

को देख-समझ कर भी बर्फ की तरह जमी रहती हैं | वह बर्फ यदा-कदा उसके आसू के रूप में पिघलती तो हैं, परन्तु पूरी तरह छिपी सी |

इस प्रकार सूर्यबाला जी का समूचा साहित्य जीवन के प्रत्येक पहलू को लेकर चला हैं | हर वर्ग , हर उम्र , हर परिस्थिति का चित्रण उसमे हुआ हैं | उनके साहित्य की प्रधान विशेषता हैं - आदर्शो की स्थापना, मानवीय संबंधों को प्रधानता और उनकी समन्वयवादिता | एक ट्रेंड के साथ न चलकर वो अपना एक अलग वर्ग और स्थान निश्चित करती हैं | समाज के उन पात्रों, स्थितियों व मुद्दों को आधार बना कर लिखती हैं जो जीवन की आपाधापी में कही दबे-से, अनकहे-अनछुए-अनदेखे रह जाते हैं | महिलाओं को लेकर उन्होंने जो साहित्य रचा हैं , उसमे कही भी विमर्श का स्वर या नारा मुखर नहीं हुआ हैं | वरन उन पात्रों के माध्यम से उन्होंने उनकी अनकही जिंदगी को शब्द प्रदान किये हैं | पारिवारिक रिश्तों में भावनाओ और आदर्शो की वकालत करती हुई लेखिका ने समसामयिक मुद्दों पर भी अपनी लेखनी चलायी हैं | बात चाहे बाल मजदूरी, आतंकवाद या बेरोजगारी की हो , सभी का रूपायन उनके साहित्य में मिलता हैं | एक प्रेरणादायी शक्ति उनके साहित्य में विद्यमान हैं, जो पाठक को परम्पराओ से जुड़े रहने व आदर्शों के पालन का सन्देश देती हैं | यही इनका साहित्यिक अवदान हैं , उनके रचना कर्म की महानता हैं |

सन्दर्भ सूची :

१. डॉ. सूर्यबाला लाल , गृहप्रवेश (बाऊजी और बन्दर) , ग्रन्थ अकादमी, नई दिल्ली ,२०१०, पृष्ठ सं. ४४

PEN2PRINT®
Edupedia Publications Pvt Ltd

साहित्य संहिता

Available at http://www.sahityasamhita.org/

ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 10
November 2015

२. डॉ .सूर्यबाला लाल , थाली भर चाँद (संताप) , सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, २०११ , पृष्ठ सं. ८९

३. डॉ .सूर्यबाला लाल , थाली भर चाँद (रहमदिल) ,सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, २०११ , पृष्ठ सं. ३५

४. डॉ .सूर्यबाला लाल , थाली भर चाँद , सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, २०११ , पृष्ठ सं. १५२

५. डॉ. सूर्यबाला लाल , साँझबाती (आखिरी विदा) , ग्रन्थ अकादमी, नई दिल्ली, २०१५, पृष्ठ सं. ७७

६. डॉ. सूर्यबाला लाल , साँझबाती (सुनंदा छोकरी की डायरी) , ग्रन्थ अकादमी, नई दिल्ली, २०१५, पृष्ठ सं. ८८

७. डॉ. सूर्यबाला लाल , साँझबाती (आदमकद) , ग्रन्थ अकादमी, नई दिल्ली, २०१५, पृष्ठ सं. १०१

८. डॉ. सूर्यबाला लाल , गृहप्रवेश (दूज का टीका) , ग्रन्थ अकादमी, नई दिल्ली ,२०१०, पृष्ठ सं. १२८

नीरजा सिंह

हिंदी विभाग , राजस्थान विश्वविद्यालय,

जयपुर, राजस्थान |

पता :- ८३, बाल विहार कॉलोनी , जोशी मार्ग के पास,

कालवाड़ रोड , झोटवाड़ा, जयपुर, राजस्थान

पिनकोड- ३०२०१२

मोबाइल- ९५३०१५७०३६